दिलीप आचार्य 'सोमेश्वर'

प्रतिबिम्ब

शहर की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में आर्यन की मोबाइल से शुरू होती थी । आँख खुलते ही वह स्क्रीन पर उँगलियाँ चलाने लगता। मोबाइल उसकी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया था। घर में माँ चाय रख जातीं, पिता अख़बार पढ़ते, पर आर्यन का ध्यान उन पर नहीं जाता।
घर में एक अजीब–सी चुप्पी दिखाई देती थी हरदम। सब साथ होते हुए भी अलग–अलग थे। भोजन की मेज़ पर भी बातचीत कम, तरह तरह के टोन अधिक सुनाई देते।
एक दिन उसकी दादी गाँव से आईं। उन्होंने देखा कि घर में कुछ अजीब सी चुप्पी है,उन्होंने सीधे कुछ नहीं कहा। बस एक शाम
जब बिजली चली गई और इंटरनेट भी बंद हो गया, तब घर में हलचल मच गई। आर्यन मोबाइल की बैटरी देखते ही उदास होगया। कुछ ही देर में मोबाइल चुप हो गया। अब उसके पास समय था, पर करने को कुछ नहीं।
वह अनमने भाव से बालकनी में आकर बैठ गया। दादी ने धीरे से उसके सिर पर हाथ घुमाते अपने जमाने की बातें शुरू कीं—कैसे वे बिना बिजली के चाँदनी में पढ़ती थीं, कैसे परिवार रात में साथ बैठकर गीत गाता था। पिता ने अपने संघर्ष के दिनों का ज़िक्र किया। माँ ने हँसते हुए आर्यन को उसके बचपन की शरारतें याद दिलाईं।
धीरे–धीरे आर्यन की बेचैनी कम होने लगी। आज उसे ऑनलाइन वीडियो से भी ज्यादा दादी और माता पिता की ऑफलाइन बातों से पहली बार अपने ही घर में उपस्थित होने का अहसास हो रहा था।
चेहरों की मुस्कान, आवाज़ों की गर्माहट, और साथ बैठने का सुकून—यह सब मोबाइल स्क्रीन से अधिक उजला था।
अगले दिन बिजली आई, इंटरनेट भी। मोबाइल फिर से चमक उठा। पर आर्यन के भीतर कुछ बदल चुका था। उसने सोच लिया किया कि तकनीक का उपयोग करेगा, पर उसे अपने जीवन का केंद्र नहीं बनाएगा। उसने तय कर लिया —भोजन के समय और रात में एक घंटा परिवार के लिए होगा ,मोबाइल के लिए नहीं।
कुछ ही दिनों में घर का वातावरण बदल गया। खाने की मेज पर सिर्फ ठहाकों की आवाज थे ,भोजन का स्वाद आने लगा था और संबंधों की डोर फिर से मज़बूत हुई। आर्यन का मन शायद कह रहा था कि

आधुनिक साधनों से सुविधा मिल सकती है ,अपनापन नहीं। जीवन की सच्ची रोशनी स्क्रीन से नहीं, संबंधों से आती है। साधन मेरे जीवन का स्वामी नहीं बन सकता।
आज उसे मोबाइल स्क्रीन से ज्यादा परिवार के आईने में जीवन का उजला प्रतिबिम्ब साफ़ नज़र आ रहा था।